## पद १५१

(राग: पिलु - ताल: त्रिताल)

करुणाकर कृष्ण मुरारे। कमलावर धांउनि येई रे।।ध्रु.।। राधाप्रिय नंदकंदा। गोवर्धनधारी मुकुंदा। निरुपाधि नित्यानंदा। वृन्दावनवासी गोविंदा।।१।। गोपाळा वाहन सुपर्णा। वृजदारामानसहरणा। यदुनायक दीनोद्धरणा। कमलाक्षा

मेघवर्णा ।।२।। मुरलीधर कैटभारी। कंसांतक लीलाधारी। पांडवसखा दीनसहकारी। भयकृद्भयनाशन हरी।।३।। योगीजनमानसहंसा। जगतारक जगन्निवासा। अविनाशा आदि पुरुषा। रक्षक दीन माणिक दासा।।४।।